लोकप्रिय साहित्य बनाम गंभीर साहित्य: संदर्भ हिंदी साहित्य

डॉ राजेश शर्मा [1]

[1] **सहायक आचार्य (हिंदी), जनार्दन राय नगर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय), उदयपुर.**

ABSTRACT:

साहित्य जगत में यह चर्चा हमेशा से आम रही है कि साहित्य का मुख्य उद्देश्य क्या होना चाहिए. मनोरंजन के लिए लिखा गया लोकप्रिय साहित्य या समाज संस्कृति और मानव मूल्य पर गहन चिंतन को संबोधित गंभीर साहित्य. संस्कृत काव्यशास्त्र के उद्भट आचार्य मम्मत ने काव्य के प्रयोजन को स्पष्ट करते हुए कहा था कि काव्य का प्रयोजन यश प्राप्ति, धन प्राप्ति,व्यवहार का ज्ञान प्राप्त करने तथा अमंगल नाश के लिए किया जाना चाहिए. काव्य प्रयोजन की उपर्युक्त परिभाषा में काव्य अर्थात साहित्य लेखन एकाधिक कारणों से साहित्य का सृजन किया जाता है. गंभीर साहित्य में जहां गहन विषयों यथा दार्शनिक विमर्श और सांस्कृतिक चेतना के लिए वैचारिक चिंतन प्रधान साहित्य लिखा जाता है वहां लोकप्रिय साहित्य में रोचक तत्व और मनोरंजन का पुट अधिक रहता है. यह शोध पत्र हिंदी में इन दोनों प्रकार के साहित्य की विशेषताओं उद्देश्यों उसके प्रभावों और समाज में उसकी उपयोगिता का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है इसमें लोकप्रिय और गंभीर साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को स्पष्ट करते हुए साहित्यिक दृष्टि से आधुनिक हिंदी साहित्य में इसकी भूमिका पर का पर विचार किया गया है.

KEYWORDS:

लोकप्रिय साहित्य, गंभीर साहित्य, हिंदी साहित्य, सांस्कृतिक चेतना, आधुनिक कविता, कथा साहित्य, चिंतन प्रधान साहित्य।

साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है यह न केवल भाषा और संस्कृति का संरक्षण करता है बल्कि यह विचारों और भावनाओं का सबल संवाहक भी होता है. लोकप्रिय साहित्य आम पाठक के अनुभव, भावनाओं, कल्पनाओं और मनोरंजन के तत्व से परिपूर्ण होता है.भाषा की दृष्टि से यह सरल और सहज होता है और रुचिकर कथानक में प्रस्तुत होता है इसी वजह से इसकी पहुंच अपेक्षाकृत समाज के बड़े हिस्से तक रहती है. वहीं गंभीर साहित्य समाज संस्कृति राजनीति दर्शन अध्यात्म और मानव के जटिल अनुभवों के गहन विश्लेषण पर आधारित होता है इसमें साहित्य सृजन का उद्देश्य मनोरंजन ना होकर वैचारिक और चिंतन प्रधान होता है. इसका एक लक्ष्य मनुष्य को गूढ़ रहस्यों के विषय प्रवृत्त करना भी होता है. अतः इसकी भाषा प्रतीकात्मक सांकेतिक और लाक्षणिक होती है तथा कम शब्दों में अधिक कहने का कौशल इसमें दिखाई देता है. हिंदी साहित्य में लोकप्रिय साहित्य और गंभीर साहित्य दोनों का योगदान महत्वपूर्ण रहा है अतः दोनों का महत्व समान है. किसी भी एक को ए के साहित्य को श्रेष्ठ और अन्य को अश्रेष्ठ कहना असंगत प्रतीत होता है. वस्तुत इनके बीच का संतुलन न केवल साहित्य के गुणवत्ता बढ़ता है बल्कि पाठकों के दृष्टिकोण को भी व्यापक बनता है. मध्यकालीन हिंदी साहित्य पर विचार करें तो उसे समय के लोक कथाएं भजन कीर्तन और वीरगाथाएं आमजन के अनुभव और मनोरंजन का साधन थी भक्तिकालीन कवियों जैसे सूरदास और तुलसीदास ने अपनी कई रचनाओं में सरल भाषा का प्रयोग करते हुए आम जन को नैतिक और धार्मिक संदेश दिए थे इस दौर में संत कवियों ने भी साहित्य जैन भाषा में लिखा और अपने संदेशों को उन तक पहुंचाने का काम किया था. आधुनिक काल में रोमांचक उपन्यासों जासूसी अय्यारी और प्रेम कथाओं से भरपूर उपन्यासों ने लोकप्रिय साहित्य की भूमिका तैयार की थी. इसी दौर के बड़े कवियों में तुलसीदास, जायसी, कबीर ने गंभीर साहित्य रच कर भक्ति और दर्शन जैसे विषयों को अभिव्यक्त किया था. आधुनिक काल में छायावादी दौर में अनेक कवियों और चिंतकों ने गंभीर साहित्य की रचना की थी छायावाद के चार प्रमुख कवियों के साथ-साथ इस युग के गद्यकारों ने भी इस दिशा में हिंदी साहित्य को उच्च कोटि के चिंतन से भरपूर किया था. लोकप्रिय साहित्य समाज उपयोगी होता है जिसमें लेखक सरल भाषा में मनोरंजक ढंग से अपने विचार पहुंचने का कार्य करता है. इस प्रकार का साहित्य पाठक का व्यापक समुदाय बनाने की दृष्टि से बहुत आवश्यक है बाल साहित्य में पौराणिक और ऐतिहासिक कथाएं "पंचतंत्र " _अकबर बीरबल की कहानियां " लोकप्रिय साहित्य के उदाहरण हैं. लेकिन जब केवल मनोरंजन ही साहित्य का उद्देश्य हो जाए तब बड़ा खतरा यह उपस्थित होता है कि पाठक यथार्थ से कट जाता है और सामाजिक चेतना का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है, वर्तमान में बाजारवाद से नियंत्रित साहित्य भी इसी प्रकार पाठक समुदाय को अवश्य व्यापक कर रहा है किंतु वह अपने सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वाह भली भांति नहीं कर पा रहा है. वहीं गंभीर कोटि का साहित्य अपने गहन विचारों और जटिल भाषा शैली के कारण अधिकांश पाठकों के लिए दुर्बोध बन जाता है ऐसी स्थिति में साहित्य चाहे जितना उद्देश्यपूर्ण हो वह अपने पाठकों की पहुंच से बाहर हो जाता है. आज के दौर में डिजिटल मीडिया और सोशल मीडिया ने लोकप्रिय साहित्य का अधिक अधिक प्रसार किया है और उससे पहले से ज्यादा प्रभावशाली भी बना दिया है,वहीं गंभीर साहित्य अब विशिष्ट पत्रिकाओं और अकादमिक प्रकाशनों के माध्यम से पाठकों तक पहुंच रहा है साहित्यकार और समीक्षक लगातार इस मुद्दे पर चर्चा कर रहे हैं कि क्या लोकप्रिय साहित्य गंभीर साहित्य का मार्ग प्रशस्त कर सकता है या गंभीर साहित्य बिना लोकप्रियता के समाज में अपना प्रभाव खो देगा. किंतु दोनों ही वर्ग का साहित्य समुचित संतुलन से अपनी उपस्थिति बनाए रख सकेगा. लोकप्रिय साहित्य जन सामान्य में पढ़ने की रुचि जागृत करता है इसलिए आगे चलकर इस बात की संभावना बनी रहती है कि पाठक गंभीर साहित्य के पठान की ओर उन्मुख होता. वहीं गंभीर साहित्य रुचि पूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया जाए तो वह बोझिलता से मुक्त होकर अधिक ग्राहय बन सकता है. निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है की लोकप्रिय साहित्य और गंभीर साहित्य दोनों हिंदी साहित्य की समृद्धि के लिए आवश्यक और प्रासंगिक हैं.लोकप्रिय साहित्य जहां पाठक वर्ग तैयार करता है उनकी रुचि को बढ़ाने के लिए उसमें मनोरंजन का रस घोलता है ,वहीं गंभीर साहित्य समाज में चिंतन को विकसित कर उसे सकारात्मक सामाजिक बदलाव की प्रेरणा देता है. दोनों के बीच समुचित संतुलन ही साहित्य को समृद्ध और प्रभावशाली बनाने के लिए आवश्यक है. इस प्रकार हिंदी साहित्य में लोकप्रिय साहित्य और गंभीर साहित्य की बहस केवल साहित्यिक विमर्श तक ही सीमित नहीं है बल्कि वह समाज, संस्कृति और दार्शनिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण प्रतीत होती है.

REFERENCES

1. गुप्त, रामकृष्ण. हिंदी साहित्य का इतिहास. नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट.
2. नामवर सिंह. साहित्य और समाज. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
3. शर्मा, रमेशचंद्र. समकालीन हिंदी साहित्य में प्रवृत्तियाँ. नई दिल्ली: साहित्य अकादमी.
4. वर्मा, महादेवी. गीतांजलि और अन्य कविताएँ. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
5. बाल साहित्य और लोककथाएँ: साहित्य के चयनित उदाहरण.
6. हिंदी साहित्य की समकालीन पत्रिकाएँ और शोध लेख.